• छोटा मेरा खेत

–उमाशंकर जोशी

कवि परिचय

जीवन परिचय–गुजराती कविता के सशक्त हस्ताक्षर उमाशंकर जोशी का जन्म 1911 ई० में गुजरात में हुआ था। 20वीं सदी में इन्होंने गुजराती साहित्य को नए आयाम दिए। इनको परंपरा का गहरा ज्ञान था। इन्होंने गुजराती कविता को प्रकृति से जोड़ा, आम ज़िंदगी के अनुभव से परिचय कराया और नयी शैली दी। इन्होंने भारत की आज़ादी की लड़ाई में भाग लिया तथा जेल भी गए। इनका देहावसान सन 1988 में हुआ।

रचनाएँ–उमाशंकर जोशी का साहित्यिक अवदान पूरे भारतीय साहित्य के लिए महत्त्वपूर्ण है। इन्होंने एकांकी, निबंध, कहानी, उपन्यास, संपादन व अनुवाद आदि पर अपनी लेखनी सफलतापूर्वक चलाई। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं–

(*i*) **एकांकी**–विश्व-शांति, गंगोत्री, निशीथ, प्राचीना, आतिथ्य, वसंत वर्षा, महाप्रस्थान, अभिज्ञा आदि।

(*ii*) **कहानी**–सापनाभारा, शहीद।

(*iii*) **उपन्यास**–श्रावणी मेणो, विसामो।

(*iv*) **निबंध**–पारकांजव्या।

(*v*) **संपादन**–गोष्ठी, उघाड़ीबारी, क्लांत कवि, म्हारा सॉनेट, स्वप्नप्रयाण तथा 'संस्कृति' पत्रिका का संपादन।

(*vi*) **अनुवाद**–अभिज्ञान शाकुंतलम् व उत्तररामचरित का गुजराती भाषा में अनुवाद।

काव्यगत विशेषताएँ–उमाशंकर जोशी ने गुजराती कविता को नया स्वर व नयी भंगिमा प्रदान की। इन्होंने जीवन के सामान्य प्रसंगों पर आम बोलचाल की भाषा में कविता लिखी। इनका साहित्य की विविध विधाओं में योगदान बहुमूल्य है। हालाँकि निबंधकार के रूप में ये गुजराती साहित्य में बेजोड़ माने जाते हैं।

भाषा-शैली–जोशी जी की काव्य-भाषा सरल है। इन्होंने मानवतावाद, सौंदर्य व प्रकृति के चित्रण पर अपनी कलम चलाई है। इन्होंने कविता के माध्यम से शब्दचित्र प्रस्तुत किए हैं।

कविता का सार

(क) छोटा मेरा खेत

इस कविता में कवि ने खेती के रूप में कवि-कर्म के हर चरण को बाँधने की कोशिश की है। कवि को कागज़ का पन्ना एक चौकोर खेत की तरह लगता है। इस खेत में किसी अंधड़ अर्थात भावनात्मक आँधी के प्रभाव से किसी क्षण एक बीज बोया जाता है। यह बीज रचना, विचार और अभिव्यक्ति का हो सकता है। यह कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है और इस प्रक्रिया में स्वयं गल जाता है। उससे शब्दों के अंकुर निकलते हैं और अंततः कृति एक पूर्ण स्वरूप ग्रहण करती है जो कृषि-कर्म के लिहाज़ से पुष्पित-पल्लवित होने की स्थिति है। साहित्यिक कृति से जो अलौकिक रस-धारा फूटती है, वह क्षण में होने वाली रोपाई का ही परिणाम है। पर यह रस-धारा अनंत काल तक चलने वाली कटाई से कम नहीं होती। खेत में पैदा होने वाला अन्न कुछ समय के बाद समाप्त हो जाता है, किंतु साहित्य का रस कभी समाप्त नहीं होता।

निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सप्रसंग व्याख्या कीजिए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) छोटा मेरा खेत

1. *छोटा मेरा खेत चौकोना*
कागज़ का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष। (पृष्ठ-64)

शब्दार्थ-***चौकोना***—चार कोनों वाला। ***पन्ना***—पृष्ठ। ***अंधड़***—आँधी। ***क्षण***—पल। ***रसायन***—सहायक पदार्थ। ***नि:शेष***—पूरी तरह। ***अंकुर***—नन्हा पौधा। ***फूटे***—पैदा हुए। ***पल्लव***—पत्ते। ***पुष्पों***—फूलों। ***नमित***—झुका हुआ। ***विशेष***—खास तौर पर।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक '**आरोह, भाग-2**' में संकलित कविता '**छोटा मेरा खेत**' से उद्धृत है। इसके रचयिता गुजराती कवि **उमाशंकर जोशी** हैं। इस अंश में कवि ने खेत के माध्यम से कवि-कर्म का सुंदर चित्रण किया है।

व्याख्या-कवि कहता है कि उसे कागज का पन्ना एक चौकोर खेत की तरह लगता है। उसके मन में कोई भावनात्मक आवेग उमड़ा और वह उसके खेत में विचार का बीज बोकर चला गया। यह विचार का बीज कल्पना के सभी सहायक पदार्थों को पी गया तथा इन पदार्थों से कवि का अहं समाप्त हो गया। जब कवि का अहं हो गया तो उससे सर्वजनहिताय रचना का उदय हुआ तथा शब्दों के अंकुर फूटने लगे। फिर उस रचना ने एक संपूर्ण रूप ले लिया। इसी तरह खेती में भी बीज विकसित होकर पौधे का रूप धारण कर लेता है तथा पत्तों व फूलों से लदकर झुक जाता है।

विशेष-(*i*) कवि ने कल्पना के माध्यम से रचना-कर्म को व्यक्त किया है।
(*ii*) रूपक अलंकार है। कवि ने खेती व कविता की तुलना सूक्ष्म ढंग से की है।
(*iii*) 'पल्लव-पुष्प', 'गल गया' में अनुप्रास अलंकार है।
(*iv*) खड़ी बोली में सुंदर अभिव्यक्ति है।
(*v*) दृश्य बिंब का सुंदर उदाहरण है।
(*vi*) प्रतीकात्मकता का समावेश है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर-

प्रश्न (क) *कवि ने कवि-कर्म की तुलना किससे की है और क्यों?*
(ख) *कविता की रचना-प्रक्रिया समझाइए।*
(ग) *मूल विचार को 'क्षण का बीज' क्यों कहा गया है? उसका रूप-परिवर्तन किन रसायनों से होता है?*

उत्तर (क) कवि ने कवि-कर्म की तुलना खेत से की है। खेत में बीज खाद आदि के प्रयोग से विकसित होकर पौधा बन जाता है। इस तरह कवि भी भावनात्मक क्षण को कल्पना से विकसित करके रचना-कर्म करता है।

(ख) कविता की रचना-प्रक्रिया फसल उगाने की तरह होती है। सबसे पहले कवि के मन में भावनात्मक आवेग उमड़ता है। फिर वह भाव क्षण-विशेष में रूप ग्रहण कर लेता है। वह भाव कल्पना के सहारे विकसित होकर रचना बन जाता है तथा अनंत काल तक पाठकों को रस देता है।

(ग) मूल विचार को 'क्षण का बीज' कहा गया है क्योंकि भावनात्मक आवेग के कारण अनेक विचार मन में चलते रहते हैं। उनमें कोई भाव समय के अनुकूल विचार बन जाता है तथा कल्पना के सहारे वह विकसित होता है। कल्पना व चिंतन के रसायनों से उसका रूप-परिवर्तन होता है।

2. *छोटा मेरा खेत चौकोना*
कागज़ का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
झूमने लगे फल,
रस अलौकिक,
अमृत धाराएँ फूटतीं
रोपाई क्षण की,
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से ज़रा भी नहीं कम होती।
रस का अक्षय पात्र सदा का
छोटा मेरा खेत चौकोना। (पृष्ठ-64)
[*CBSE (Outside), 2011 (C), Sample Paper, 2015*]

शब्दार्थ-***अलौकिक***—दिव्य, अद्भुत। ***रस***—साहित्य का आनंद, फल का रस। ***रोपाई***—छोटे-छोटे पौधों को खेत में लगाना। ***अमृत धाराएँ***—रस की धाराएँ। ***अनंतता***—सदा के लिए। ***अक्षय***—कभी नष्ट न होने वाला। ***पात्र***—बर्तन, काव्यानंद का स्रोत।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश हमारी की पाठ्यपुस्तक '**आरोह, भाग-2**' में संकलित कविता '**छोटा मेरा खेत**' से उद्धृत है। इसके रचयिता गुजराती कवि **उमाशंकर जोशी** हैं। इस कविता में कवि ने खेत के माध्यम से कवि-कर्म का सुंदर चित्रण किया है।

व्याख्या–"छोटा मेरा खेत ..... नमित हुआ विशेष।" की व्याख्या काव्यांश-1 में देखें। कवि आगे कहता है कि जब पन्ने रूपी खेत में कविता रूपी फल झूमने लगता है तो उससे अद्‌भुत रस की अनेक धाराएँ फूट पड़ती हैं जो अमृत के समान लगती हैं। यह रचना पल भर में रची थी, परंतु उससे फल अनंतकाल तक मिलता रहता है। कवि इस रस को जितना लुटाता है, उतना ही यह बढ़ता जाता है। कविता के रस का पात्र कभी समाप्त नहीं होता। कवि कहता है कि उसका कविता रूपी खेत छोटा-सा है, उसमें रस कभी समाप्त नहीं होता।

विशेष– (*i*) कवि-कर्म का सुंदर वर्णन है। (*ii*) कविता का आनंद शाश्वत है।
(*iii*) 'छोटा मेरा खेत चौकाना' में रूपक अलंकार है। (*iv*) तत्सम शब्दावलीयुक्त खड़ी बोली है।
(*v*) 'रस' शब्द के अर्थ हैं–काव्य रस और फल का रस। अत: यहाँ श्लेष अलंकार है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर–

प्रश्न **(क)** 'रस अलौकिक, अमृत धाराएँ फूटती'। इस की अलौकिक धाराएँ कब, कहाँ और क्यों फूटती हैं?
(ख) 'रस का अक्षय पात्र' किसे कहा गया है और क्यों?
(ग) कवि इन पंक्तियों में खेत से किसकी तुलना कर रहा है?

उत्तर (क) अलौकिक अमृत तुल्य रस-धाराएँ फलों के पकने पर फलों से फूट पड़ती हैं। ऐसा तब होता है जब उन पके फलों को काटा जाता है।
(ख) 'रस का अक्षय पात्र' साहित्य को कहा गया है, क्योंकि साहित्य का आनंद कभी समाप्त नहीं होता। पाठक जब भी उसे पढ़ता है, आनंद की अनुभूति अवश्य करता है।
(ग) कवि ने इन पंक्तियों में खेत की तुलना कागज के उस चौकोर पन्ने से की है, जिस पर उसने कविता लिखी है। इसका कारण यह है कि इसी कागजरूपी खेत पर कवि ने अपने भावों-विचारों के बीज बोए थे जो फसल की भाँति उगकर आनंद प्रदान करेंगे।

निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) छोटा मेरा खेत

1. *छोटा मेरा खेत चौकोना*
कागज का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

प्रश्न **(क)** *शब्द के अंकुर फूटने के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?*
(ख) *इस अंश में सांगरूपक अलंकार दिखाई देता है। कैसे?*
(ग) *इस पद्यांश का भाषिक सौंदर्य बताइए।*

उत्तर (क) शब्द के अंकुर फूटने के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि भाव-विचार काव्यात्मक रूप लेकर कल्पना के सहारे विकसित होकर कविता का रूप ले लेता है।

(ख) इस अंश में कवि ने सांगरूपक अलंकार का प्रयोग किया है। कवि ने कविता और खेती की तुलना सूक्ष्म ढंग से की है। बीज के बोने से लेकर उसके विकसित होने तक की क्रिया और भाव के रचना बनने तक की क्रिया को व्यक्त किया है। कागज़ के पन्ने व चौकोर खेत में आकार व गुण की समानता बताई गई है। अत: यहाँ रूपक अलंकार है।

(ग) इस अंश में कवि ने तत्सम शब्दों का सुंदर प्रयोग किया है। 'रसायन' विज्ञान का शब्द है। खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है। कागज़, पन्ना आदि विदेशी शब्द हैं। भाषा में सरलता है।

2. *झूमने लगे फल*
रस अलौकिक
अमृत धाराएँ फूटतीं
रोपाई क्षण की,
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती।
रस का अक्षय पात्र सदा का।
छोटा मेरा खेत चौकोना।

प्रश्न **(क)** *इस अंश का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।*
(ख) *इस अंश का काव्य-सौंदर्य बताइए।*
(ग) *'लुटते रहने से कम नहीं होती' का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।*

उत्तर (क) इस अंश में कवि ने काव्य रस की अलौकिकता पर प्रकाश डाला है। काव्य का रस अनंतकाल तक रहता है तथा यह निरंतर बाँटने पर और अधिक बढ़ता है। इसके अतिरिक्त, शाश्वत रचनाएँ क्षण भर में ही उत्पन्न होती हैं।

(ख) इस अंश में कवि ने श्लेष अलंकार का प्रयोग किया है। 'रस' शब्द के दो अर्थ हैं–साहित्यिक आनंद व फलों का रस। तत्सम शब्दावली के बावजूद भाषा में सहजता है। मुक्त छंद का प्रयोग है। दृश्य बिंब है। 'छोटा मेरा खेत चौकोना' में रूपक अलंकार है।

(ग)
- 'लुटते रहने से कम नहीं होती' का भाव यह है कि काव्य-रस का चाहे जितना भी आस्वादन किया जाए या बाँटा जाए, कम नहीं होता।
- लुटते रहने के बाद भी कम न होने के कारण विरोधाभास अलंकार है।

1. *छोटे चौकोने खेत को कागज़ का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है?* [CBSE (Delhi), 2010]

अथवा

कागज़ के पन्ने की तुलना छोटे चौकोने खेत से करने का आधार स्पष्ट कीजिए। [CBSE (Delhi), 2014]

उत्तर कवि ने छोटे चौकाने खेत को कागज़ का पन्ना कहा है। इससे कवि बताना चाहता है कि कवि-कर्म तथा खेती में बहुत समानता है। जिस प्रकार छोटा खेत चौकोर होता है, उसी प्रकार कागज़ का पन्ना भी चौकोर होता है। जिस प्रकार खेत में बीज, जल, रसायन डालते हैं और उसमें अंकुर, फूल, फल आदि उगते हैं, उसी प्रकार कागज़ के पन्ने पर कवि अपने भाव के बीज बोता है तथा उसे कल्पना, भाषा आदि के ज़रिये रचना के रूप में फसल मिलती है। फसल एक निश्चित समय के बाद काट ली जाती है, परंतु कृति से हमेशा रस मिलता है।

2. *रचना के संदर्भ में 'अंधड़' और 'बीज' क्या हैं?*

उत्तर रचना के संदर्भ में 'अंधड़' का अर्थ है—भावना का आवेग और 'बीज' का अर्थ है—विचार व अभिव्यक्ति। भावना के आवेग से कवि के मन में विचार का उदय होता है तथा रचना प्रकट होती है।

3. *'रस का अक्षय पात्र' से कवि ने रचना कर्म की किन विशेषताओं की ओर इंगित किया है?*

उत्तर कवि ने रचना कर्म की निम्नलिखित विशेषताओं की ओर इशारा किया है—

(*i*) रचना कर्म का अक्षय पात्र कभी खाली नहीं होता।

(*ii*) यह जितना बाँटा जाता है, उतना ही भरता जाता है।

(*iii*) यह चिरकाल तक आनंद देता है।

4. *व्याख्या करें—*

1. शब्द के अंकुर फूटे
   पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
2. रोपाई क्षण की,
   कटाई अनंतता की
   लुटते रहने से ज़रा भी नहीं कम होती।

उत्तर 1. कवि कहना चाहता है कि जब वह छोटे खेतरूपी कागज़ के पन्ने पर विचार और अभिव्यक्ति का बीज बोता है तो वह कल्पना के सहारे उगता है। उसमें शब्दरूपी अंकुर फूटते हैं। फिर उनमें विशेष भावरूपी पुष्प लगते हैं। इस प्रकार भावों व कल्पना से वह विचार विकसित होता है।

2. कवि कहता है कि कवि-कर्म में रोपाई क्षण भर की होती है अर्थात भाव तो क्षण-विशेष में बोया जाता है। उस भाव से जो रचना सामने आती है, वह अनंतकाल तक लोगों को आनंद देती है। इस फसल की कटाई अनंतकाल तक चलती है। इसके रस को कितना भी लूटा जाए, वह कम नहीं होता। इस प्रकार कविता कालजयी होती है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. *'छोटा मेरा खेत' कविता में कवि ने खेत को रस का अक्षय पात्र क्यों कहा है?*

उत्तर कवि ने खेत को रस का अक्षय पात्र इसलिए कहा है क्योंकि अक्षय पात्र में रस कभी खत्म नहीं होता। उसके रस को जितना बाँटा जाता है, उतना ही वह भरता जाता है। खेत की फसल कट जाती है, परंतु वह हर वर्ष फिर उग आती है। कविता का रस भी चिरकाल तक आनंद देता है। यह सृजन-कर्म की शाश्वतता को दर्शाता है।

2. *'छोटा मेरा खेत' कविता का रूपक स्पष्ट कीजिए।* *[CBSE (Delhi), 2009]*

उत्तर इस कविता में कवि ने कवि-कर्म को कृषि के कार्य के समान बताया है। जिस तरह कृषक खेत में बीज बोता है, फिर वह बीज अंकुरित, पल्लवित होकर पौधा बनता है तथा फिर वह परिपक्व होकर जनता का पेट भरता है। उसी तरह भावनात्मक आँधी के कारण किसी क्षण एक रचना, विचार तथा अभिव्यक्ति का बीज बोया जाता है। यह विचार कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है तथा रचना का रूप ग्रहण कर लेता है। इस रचना के रस का आस्वादन अनंतकाल तक लिया जा सकता है। साहित्य का रस कभी समाप्त नहीं होता।

3. *कवि को खेत का रूपक अपनाने की ज़रूरत क्यों पड़ी?*

उत्तर कवि का उद्देश्य कवि-कर्म को महत्ता देना है। वह कहता है कि काव्य-रचना बेहद कठिन कार्य है। बहुत चिंतन के बाद कोई विचार उत्पन्न होता है तथा कल्पना के सहारे उसे विकसित किया जाता है। इसी प्रकार खेती में बीज बोने से लेकर फसल की कटाई तक बहुत परिश्रम किया जाता है। इसलिए कवि को खेत का रूपक अपनाने की ज़रूरत पड़ी।

4. *'छोटा मेरा खेत' कविता का उद्देश्य बताइए।*

उत्तर कवि ने रूपक के माध्यम से कवि-कर्म को कृषक के समान बताया है। किसान अपने खेत में बीज बोता है, वह बीज अंकुरित होकर पौधा बनता है तथा पकने पर उससे फल मिलता है जिससे लोगों की भूख मिटती है। इसी तरह कवि ने कागज़ को अपना खेत माना है। इस खेत में भावों की आँधी से कोई बीज बोया जाता है। फिर वह कल्पना के सहारे विकसित होता है। शब्दों के अंकुर निकलते ही रचना स्वरूप ग्रहण करने लगती है तथा इससे अलौकिक रस उत्पन्न होता है। यह रस अनंतकाल तक पाठकों को अपने में डुबोए रखता है। कवि ने कवि-कर्म को कृषि-कर्म से महान बताया है क्योंकि कृषि-कर्म का उत्पाद निश्चित समय तक रस देता है, परंतु कवि-कर्म का उत्पाद अनंतकाल तक रस प्रदान करता है।

5. *शब्दरूपी अंकुर फूटने से कवि का क्या तात्पर्य है?*

उत्तर कवि कहता है कि जिस प्रकार खेत में बीज पड़ने के कुछ दिनों बाद उसमें अंकुर फूटने लगते हैं, उसी प्रकार विचाररूपी बीज पड़ते ही शब्दरूपी अंकुर फूटने लगते हैं। यह कविता कर्म का पहला चरण है। इसके बाद ही रचना अपना स्वरूप ग्रहण करती है।

6. *कविता लुटने पर भी क्यों नहीं मिटती या खत्म होती?*

उत्तर यहाँ 'लुटने से' आशय बाँटने से है। कविता का आस्वादन अनेक पाठक करते हैं। इसके बावजूद यह खत्म नहीं होती क्योंकि कविता जितने अधिक लोगों तक पहुँचती है उतना ही अधिक उस पर चिंतन किया जाता है। वह शाश्वत हो जाती है।

स्वयं करें

1. कवि को खेत कागज के पन्ने के समान लगता है। आप इससे कितना सहमत हैं?
2. कवि ने साहित्य को किस संज्ञा से संबोधित किया है और क्यों?
3. कवि-कर्म और कृषि-कर्म दोनों में से किसका प्रभाव दीर्घकालिक होता है और कैसे?
4. कवि सायंकाल में किस माया से बचने की कामना करता है और क्यों?

निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(अ) झूमने लगे फल
रस अलौकिक
अमृत धाराएँ फूटतीं
रोपाई क्षण की,
कटाई अनंत की
लुटते रहने से ज़रा भी कम नहीं होती।

(क) *काव्यांश का भाव-सौंदर्य लिखिए।*

(ख) *भाषा-शिल्प संबंधित दो विशेषताएँ लिखिए।*

(ग) *अंतिम पंक्ति का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।*

(ब) नभ में पाँती-बँधे बगुलों के पंख,
चुराए लिए जातीं वे मेरी आँखें।
कजरारे बादलों की छाई नभ छाया,
तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया।

(क) *अंतिम पंक्ति का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।*

(ख) *काव्यांश की भाषागत विशेषताएँ लिखिए।*

(ग) *काव्यांश की अलंकार-योजना पर प्रकाश डालिए।*